Dr Vinod Baitha
Deptt. of Economics
Marwari College
Darbhanga

भूमि सुधार का अर्थ एवं महत्व D.I (Sub)

Meaning and Importance of Land Reforms

भारतीय कृषि भारत की अर्थव्यवस्था की मजबूत आधार है। भारतीय कृषि रोजगार के साथ-साथ उद्योगों के लिए कच्चे माल की भी आपूर्ति करती है भारतीय कृषि की प्रमुख समस्या कृषि उपज में वृद्धि करना है। भारतीय कृषि का प्रमुख संबंध भूमि व्यवस्था से है भारतीय कृषि की उपज कम होने के कई कारणों में से भूमि व्यवस्था की गलत प्रणाली अथवा दोषपूर्ण व्यवस्था, दोषपूर्ण स्वामित्व की प्रथा प्रमुख है। भूस्वामित्व की प्रथा से हमारे तात्पर्य उस प्रथा से है जिसके अन्तर्गत किसी व्यक्ति की भूमि पर उसके अधिकार एवं दायित्व का निर्धारण किया जाता है तथा काश्तकार एवं भूस्वामि अथवा सरकार के बीच संबंधों को स्पष्ट किया जाता है। भारत में भूस्वामित्व की प्रथा में अनेक दोष है जिसके कारण यहाँ की कृषि पिछड़ी हुई है। देश में भूस्वामित्व की प्रथा को दूर करने के लिए जो सुधार अपनाए जाते हैं उन्हें भूमिसुधार कहा जाता है। भारत में भूमि सुधार के अन्तर्गत अनेकों कार्यक्रम चलाया जा रहा है जिससे भूमि सुधार को बल मिलता है इसके अन्तर्गत मध्यस्थता का उन्मूलन, काश्तकारी कानून में सुधार, जोत का सीमा निर्धारण, जोत की चकबंदी, उपविभाजन एवं अपखण्डन को दूर करना आधुनिक एवं वैज्ञानिक तरीके से कृषि कार्य, उत्तम खाद, बीज एवं सिंचाई आदि के द्वारा भूमि सुधार का कार्यक्रम चलाया जा रहा है। भूमि सुधार के मुख्य उद्देश्य निम्न प्रकार से है।

(1) कृषि उत्पादन में वृद्धि लाने के लिए उन सभी रुकावटों को दूर करना जो भूमि व्यवस्था के वर्तमान ढाँचे के कारण उत्पन्न होती है।

(2) कृषि के क्षेत्र में सभी प्रकार के शोषणों का अंत कर समानता के आधार पर कृषि में सामाजिक न्याय की स्थापना करना।

भारत जैसे कृषि प्रधान देश में भूमि सुधारों का विशेष महत्व है। भारत का आर्थिक विकास वास्तव में कृषि के विकास के साथ जुड़ा हुआ है। कृषि उत्पादन में वृद्धि करने के लिए आधुनिक एवं वैज्ञानिक कृषि अच्छी खाद, बीज, सिंचाई आदि की जरूरत पड़ती है। लेकिन इसके लिए भूमि की व्यवस्था भी उपयुक्त होनी चाहिए यदि भूस्वामित्व की व्यवस्था दोषपूर्ण हो तो कृषि क्षेत्र में प्रगति नहीं हो सकेगी ऐसी व्यवस्था में भूमि सुधार द्वारा ही भूमि व्यवस्था को दूर किया जा सकता है।

कृषि के क्षेत्र में बचत एवं विनियोग में वृद्धि करने के लिए भूमि सुधारों का महत्व है कृषि उत्पादन में तभी वृद्धि हो सकती है। जब किसान आवश्यक बचत करे यदि भूमि व्यवस्था के द्वारा किसानों का शोषण किया जाता हो तो उसके पास पूंजी निर्माण के लिए बचत ही नहीं हो सकेगी अतः भूमि सुधार द्वारा

Scanned by CamScanner

बचत एवं विनियोग में वृद्धि करने के लिए इस प्रकार के शोषण को समाप्त किया जा सकता है।
देश के ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक न्याय दिलाने के लिए भी भूमि सुधार की आवश्यकता है। भारत में भूस्वामित्व की दोषपूर्ण प्रथा के कारण भूमि का अधिकांश भाग कुछ लोगों के पास ही केन्द्रित है और अधिकांश किसानों के पास बहुत कम ही जमीन है या वे भूमिहीन हैं। इस व्यवस्था के कारण सम्पत्ति एवं आय की वितरण की विषमता में वृद्धि होती है। अतः इस प्रकार के विषमता को दूर करने के लिए तथा ग्रामीण जनता को सामाजिक न्याय दिलाने के लिए भूमि सुधार की नितांत आवश्यकता है यदि ऐसा नहीं किया जाता है तो देश में व्यापक अशांति फैलने का भय है जिससे सारी अर्थव्यवस्था छिन्न-भिन्न हो जाएगी।
भूमि सुधारों को कार्यान्वित करने के लिए जो नीति अपनायी जाती है उसे भूमि नीति कहते है भूमि नीति के दो उद्देश्य मुख्य है
① भूमि की उपज में अधिकतम वृद्धि करना।
② धन एवं आय की विषमता को दूर कर खेती की व्यवस्था में सुधार लाना उनके शोषण को समाप्त करना तथा ग्रामीण जनसंख्या के विभिन्न वर्गों को विकास के समुचित अवसर प्रदान करना।
भूमि सुधार व्यवस्था 1948 ई० में कृषि सुधार समिति ने भूमि व्यवस्था में कुछ सुधार लाने के लिए कुछ सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया जिसे योजना आयोग ने स्वीकार किया था। यह सिद्धान्त भी दो उद्देश्यों से संबंधित थे।
① कृषि व्यवस्था के द्वारा किसानों को व्यक्तित्व विकास होना चाहिए।
② उत्पादन क्षमता को अधिक किया जाना चाहिए ③ भूमि व्यवस्था ऐसी हो जिसमें किसानों की शोषण व्यवस्था समाप्त होना चाहिए ④ भूमि सुधार कार्यक्रम व्यवहारिक भी होना चाहिए।
भूमि व्यवस्था में किसान एवं सरकार के बीच मध्यस्थों को समाप्त किया जाय इसके लिए देश में जमींदारी प्रथा तथा मध्यस्थों को समाप्त किया गया है इसके अतिरिक्त कृषि क्षेत्रों में अधिकतम कुशलता प्राप्त करना, वैज्ञानिक रूप से लगान का निर्धारण करना, जोतों के उपविभाजन तथा तथा अपखण्डन को दूर करना, आर्थिक जोतों का निर्माण करना एवं भूमि के लिए भूमिहीनों के बीच भूमि का वितरण करना आदि उद्देश्य ~~है होना चाहिए~~ उद्देश्यों की प्राप्ती के लिए कुछ परिवर्तन आवश्यक है जिनमें निम्नलिख प्रमुख है ① जमींदारी प्रथा का उन्मूलन, खेती की व्यवस्था में सुधार के लिए कानून में परिवर्तन, जोतों का सीमा निर्धारण, जोतों ~~की चकबंदी~~, जोतों के आकार को बड़ा करना कृषि कार्य में यंत्रों का प्रयोग, सिंचाई, खाद, बिजली, बीज का समुचित प्रबंध करना, ये सभी प्रबंध भारत सरकार द्वारा किया जा रहा है।

Scanned by CamScanner